9. (क) दिसोम साधिन लाहा संताली साँवहेंत् हारा राकाब रे विदेशी कोवाक् कुरुमुटू बाबोत् ते ओलमे।

(ख) संताली साँवहेंत् रेनिच् मित नामडाक् साँवहेंदिया (प्रसिद्ध साहित्यकार) वाक् जिवनी आर का़मी-का़सनी को ताय ओलमे। 20×2=40

10. (क) संताली नाटक दो़ चेत् काना? साँवता रे नाटक रेयाक् 'ठाँव' से मोहोत चेत् लेका मेनाक् आ? ओलमे।

(ख) संताली साँवहेंत् रेनिच् मित नामडाक नाटककाराक् जिवनी आर नाटक पुथी बाबोत् ओलमे। 20×2=40

★★★

Total No. of Printed Pages—5

4CCSME

SANTALI LANGUAGE AND LITERATURE

संताली भाषा और साहित्य

PAPER—I

प्रश्न-पत्र—I

Full Marks : 200 | *Time* : 3 hours

पूर्णांक : 200 | *समय* : 3 घण्टे

हाशिये में पूर्णांक दिए गए हैं

कुल **पाँच** प्रश्नों के उत्तर दें। प्रश्न संख्या **1** अनिवार्य है। इसमें प्रत्येक अंश के लिए *200* शब्द वांछित हैं। शेष प्रश्नों में से कम-से-कम **दो** प्रश्नों के उत्तर प्रत्येक खण्ड से देने अनिवार्य हैं। उत्तर देवनागरी या ओलचिकी लिपि में लिखे जा सकते हैं, परन्तु प्रश्नवार लिपि बदलने की छूट नहीं होगी

खण्ड—अ

1. जाहाँगे **पुनया** रेयाः जोबाब बारसाय साबाद गानते एममे— 10×4=40

(क) संताली पा़रसी रे 'गछ साँवहेंत्' बाबोत् खोन्दरोक् सालाक् ओलमे।

(ख) संताली साँवहेंत् रे 'सिरजा़व साँवहेंत्' मेनते चेत् एम बाड़ाया आर चेत् लेका ते लाहान्ति हुय आकाना? ओलमे।

(ग) संताली पा़रसी रे लिपि रेयाक् आनाट (समस्या) आर सोमाधान बाबोत् ते आमाक् मो़त ओलमे।

3. (क) ञुनुम (संज्ञा) दो चेत् काना? ञुनुम रेयाक् हाटिञ को पारतुल उदूक् सालाक् ओल पुस्टावमे।

(ख) संताली बेयान लेकाते 'होड़' मेनते चेत् एम बुझावेत् काना? 'एटाक् होड़' अधिकरण, कर्म, करण साबाद चिन्हा (कारक) रेयाक् रूप पेने लेखा रे ओलमे। 20×2=40

4. (क) संताली बेयान (व्याकरण) लेकाते काजनुम गुनुम (क्रिया विशेषण) रेयाक् ओनोरोम आल काते, ओना रेयाक् हाटिञ को, उदाहरण सालाक् ओलमे।

(ख) संताली बेयान (व्याकरण) रे उपेल आकान धारा ते (उद्गम के विचार से) साबाद दो तिनाक् हाटिञ रे हाटिञ आकाना? उदाहरण सालाक् ओल पुस्टावमे। 20×2=40

5. (क) संताली बेयान (व्याकरण) लेकाते साबाद जोटेच् (समास) रेयाक् ओनोरोम ओल काते, हाटिञ को बिछनावाते ओलमे।

(ख) एम आकान हिन्दी साबाद को संताली ते ओलमे—

(i) सोमवार

(ii) मंगलवार

(iii) बुधवार

(iv) वृहस्पतिवार

(v) शुक्रवार

(vi) शनिवार

(vii) रविवार

(viii) सत्रह

(ix) अठारह

(x) उन्नीस 20×2=40

खण्ड—आ

एम आकान कुकली (प्रश्न) रेयाक् जोबाब दो बारसाय साबाद गानते, संताली पारसी तेगे एममे

6. (क) संताली साँवहेंत् रेयाक् 'ओमोनोम आर लाहान्ति' (उद्भव और विकास) चेत् लेका ते हुय आकाना? ओलमे।

(ख) संताली पारसी आर साँवहेंत् चेतान रे एटाक् पारसी रेनाङ ओड़सोङ (प्रभाव) चेत् लेकाते हुय आकान? ओलमे। 20×2=40

7. (क) हाड़मावाक् आतू ञिलिञ काहनी रे 'हाड़मावाक्' जियोन आर गिरावास बाबोत् ओलमे।

(ख) संताली साँवहेंत् रे ञिलिञ काहनी रेयाक् चेत् मोहोत् मेनाक् आ? ओलमे। 20×2=40

8. (क) संताली काहनी रेयाक् ओमोतोम आर लाहान्ति (उद्भव और विकास) चेत् लेकाते हुय आकाना? ओलमे।

(ख) संताली काहनी मेन ते चेत् एम बुझावेत् काना? काहनी रेयाक् आसोल तेतेद् (तत्त्व) दो चेत् को काना? ओलमे। 20×2=40

(घ) संताली पा़रसी रेयाक् खा़सगुन दो़ चेत्-चेत् को काना? ओलमे।

(ङ) संताली पा़रसी रे चेत्-चेत् आनाट (समस्या) मेनाक् आ? ओलमे।

(च) संताली पा़रसी 'मानकरूप' साँवहेंत् लागति तिनाक लाकतीया, ओलमे।

(छ) संताली पा़रसी ते तोरजोमायमे (अनुवाद करें)—

सच कहें तो भारतीय संस्कृति अरण्य-संस्कृति है, जिसका आविर्भाव तथा विकास अरण्यो (जंगलों) में ही हुआ है। पेड़-पौधों की पूजा तथा उनके प्रति आदर भाव कोई अंधविश्वास नहीं, अपितु जन-जीवन को समृद्ध बनाने वाले हैं। भारतीय इतिहास में प्राण देकर भी वृक्षों को बचाने की अनके कथाएँ वर्णित हैं।

(ज) काथा सुधरा़वमे—

(i) डा़गरी गोड़ा रे दुडुप् आकाना।

(ii) आम पाता जेल इञ चालाक् आ?

(iii) इञ दाका जो़म काना।

(iv) राम दाक् ए जो़जो़म काना।

(v) सिम बिली हाबुत आकाआ।

2. (क) संताली बेयान (व्याकरण) मेनते चेत् एम बुझावा? बेयान आर साँवहेंत् रेयाक् सा़गा़ई दो चेत् लेका काना? ओलमे।

(ख) संताली पा़रसी रेयाक् नागाम खोन्दरोक् सालाक् ओलमे।

20×2=40